अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वविज्ञ (वर्ष : 2023) दिनांक : 19.08.2023

समय सीमा : 3 घंटा द्वितीय वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

भगवती (खण्ड-2)–70

प्र. 1 कोई छह पारिभाषिक शब्द लिखें– 6

(क) जो नहीं है, उसका उद्भावना करना।

(ख) बलिचञ्चा-विषयक स्थिति का संकल्प।

(ग) प्रमाण की अपेक्षा से ऊंचा।

(घ) जन्म-मरण की परम्परा को परिमित करने वाला।

(ङ) वर्तमान जन्म की आयु।

(च) चरम कर्म के अनन्तर समय में जीव-प्रदेशों से होने वाले कर्म का परिशाटन।

(छ) मुनि के लिए अकल्पनीय, अग्राह्य।

प्र. 2 कोई छह प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें– 6

(क) 'दुरंतपंतलक्खणे' शब्द का अर्थ लिखें।

(ख) भावना का अर्थ एवं पर्यायवाची शब्द लिखें।

(ग) वायुकाय में वैक्रिय-शरीर की प्राप्ति कब होती है?

(घ) 'नीहरित्तए' शब्द का अर्थ बताएं।

(ङ) 'अलंघ्य' से क्या तात्पर्य है?

(च) मिथ्या प्रत्याख्यान किसे कहते हैं?

(छ) वृक्ष के दस अंगों के नाम लिखें।

प्र. 3 कोई दस प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दें– 30

(क) अप्रमत्त संयत की जघन्य और उत्कृष्ट कालावधि कितनी और किस अपेक्षा से?

(ख) मेघ का विभिन्न रूपों में परिणमन किस प्रकार होता है?

(ग) महायुद्ध और महासंग्राम में क्या अन्तर है?

(घ) व्यंतर देवों के प्रकार बताते हुए उनके आधिपत्य करने वाले देवों के नाम लिखें।

(ङ) आयुष्य बंध के विषय में दो मतान्तर कौन से हैं?

(च) रैपिड आई मूवमेंट को स्पष्ट करें।

(छ) अग्नि की दो अवस्थाओं का प्रतिपादन करें।

(ज) आधाकर्म के विषय के चार सूत्र लिखें।

(झ) हेतु का अर्थ व उसके पर्यायवाची नाम लिखें।

(ञ) सात वेदन और असात वेदन तथा करण के सम्बन्धों को स्पष्ट करें।

(ट) बहुवचन में नैरयिक के तीन विकल्प लिखें।

(ठ) मारणान्तिक-समुद्घात का दो बार प्रयोग कर जन्म लेने वालों के आहार व नए शरीर निर्माण का क्या नियम है?

प्र. 4 कोई तीन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें– 15

(क) पन्द्रह प्रकार के परमाधार्मिक देवों के नामों की व्याख्या करें।

(ख) जीव के कर्मों के उपचय के अनादित्व व सादित्व के भंगों को लिखें।

(ग) उद्गम और एषणा के दोषों की तालिका लिखें।

अथवा

निर्ग्रंथ के आहार के 42 दोषों की तालिका लिखें।

(घ) नरक व देवों में लेश्या प्राप्ति के क्रम को लिखें।

प्र. 5 पल्योपम और उसके प्रकारों का वर्णन करें। 13

अथवा

परमाणु की परिभाषा, प्रकार व नियमों को स्पष्ट करते हुए बतायें कि उसे अनेक अवयव वाला क्यों कहा जाता है?

झीणी चरचा-30

प्र. 6 कोई दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्ति में दें– 10

(क) नैरयिक अवस्था सावद्य क्यों नहीं होती?

(ख) आहारत्व निर्जरा का सहचर भाव किस अपेक्षा से है?

(ग) औपपातिक सूत्र में सिद्ध होने की जघन्य आयु कितनी और किस अपेक्षा से दी गई है?

(घ) वेद चतुःस्पर्शी है अथवा अष्टस्पर्शी?

(ङ) बयालीस दोष और बावन अनाचार निजगुण है या परगुण? कैसे।

(च) कितने गुणस्थान शाश्वत हैं और कितने अशाश्वत?

(छ) दीर्घआयु वाले मनुष्यों के कौन से कर्म पुण्य होते हैं और कौन से पाप?

(ज) संसारता और असिद्धता किन कर्मों के उदय से प्राप्त होती है?

(झ) पारिणामिक भाव के कितने भेद हैं, उनमें से एक के प्रभेद लिखें।

(ञ) चारित्र की संपूर्ण विराधना करने वाला मुनि किस गुणस्थान में रहता है? तथा जघन्य किस आयुष्य का बन्ध करता है?

(ट) भगवती के अनुसार कषाय-कुशील कौन-कौन से रूपों का निर्माण कर लेता है?

प्र. 7 कोई तीन पद्यों का शब्दार्थ करें– 12

(क) समचै सजोगी ते किसो भाव छै? उपसम वर्जी च्यार।
छ में जीव नव में जीव नै आसव, निर्जरा न्याय उदार रे।।

(ख) मोहकर्म-खयोपशम थी लहै रे, देशव्रत चिहुं चारित्र देख रे।
ए पांचूं निरवद करणी लेखे कह्या रे, त्रिहुं दृष्टि ते निरवद उज्जल लेख रे।।

(ग) बनखंड बावड़ी विकुर्वे रे, शतक तेरमे जोय जी।
नवमें उद्देसे निहालियै रे, ते पिण दंड लिया सुध होय।।

(घ) पहिलै तीजै मिथ्यात निरंतरे जी, चोथा लग सर्व अव्रत व्याप।
निरंतर देश-अव्रत पंचमें जी, तिणसूं समय-समय लागै पाप।।

प्र. 8 बारहवीं ढाल का सारांश लिखें। 8

अथवा

प्रमाद आश्रव का विवेचन करें।